प्रेम की ज्योति, ईर्ष्या का धुआं

प्रश्न : कमोबेश सभी संतों ने प्रेम की महिमा बतायी है। लेकिन आपने प्रेम को गौरीशंकर पर आसीन कर दिया! क्या सच ही प्रेम इस महापद का अधिकारी है? और क्या अस्तित्व में प्रेम इतना अधिक स्थान घेरता है, जितना आप देते हैं?

प्रेम परमयोग है; उससे ऊपर कुछ भी नहीं है। लेकिन प्रश्न इसलिये उठता है कि प्रेम परम भ्रांति भी है और उससे नीचे भी कुछ नहीं। प्रेम गिरे तो नरक है, प्रेम उठे तो स्वर्ग है। प्रेम समग्र अस्तित्व को घेरता है—निम्नतम से श्रेष्ठतम तक। प्रेम ही है जो लाता है—दुख, चिंता, संताप। प्रेम ही है जो लाता है—ईर्ष्या, जलन, वैमनस्य। प्रेम ही है जो लाता है—घृणा, हिंसा, क्रोध। प्रेम ही है जो लाता है—पागलपन, विक्षिप्तता। और प्रेम ही मोक्ष भी है—निर्वाण भी। क्योंकि प्रेम ही लाता है सुख—महासुख। ये दोनों ही चूंकि प्रेम से आते हैं, इसलिये प्रेम को समझना बड़ा बेबूझ हो जाता है। अगर एक ही बात आती होती प्रेम से, तो सब स्पष्ट हो जाता; अड़चन न होती। लेकिन ये दोनों विपरीत, प्रेम में जुड़े हैं।

असल में जो भी सत्य है, वहां द्वंद्व संयुक्त होगा। जो भी सत्य है, वहां विपरीत और विरोधी जुड़े होंगे। क्योंकि सत्य सेतु है।

एक प्रेम है, जो वासना बनता है; और एक प्रेम है, जो प्रार्थना बनता है। एक प्रेम है, जो कीचड़ ही रह जाता है; और एक प्रेम है, जो कमल बनता है। कमल की निंदा इस कारण मत करना कि कीचड़ में पैदा हुआ। और कमल के कारण कीचड़ में ही पड़े मत रह जाना—कि कीचड़ में कमल पैदा होता है।

प्रेम के मार्ग पर बड़ी सावधानी की जरूरत है। इसलिये संतों ने प्रेम को खड्ग की धार कहा। वह तलवार की पतली धार पर चलने जैसा है। इधर गिरे तो कुआं, उधर गिरे तो खाई। सम्हले—तो पहुंचे। तो प्रेम का मार्ग बारीक है; अति सूक्ष्म है। और इसलिये प्रेम शब्द भी बहुत अर्थ रखता है। जब कामी इस शब्द का उपयोग करता है, तो प्रेम का अर्थ होता है—काम। और जब भक्त इसी शब्द का उपयोग करता है, तो प्रेम का अर्थ होता है—राम। काम से लेकर राम तक सब प्रेम से जुड़ा है।

तो तुम्हारा प्रश्न सार्थक है। तुम्हारे मन में चिंता हुई होगी कि मैं प्रेम को इतना परमपद देता हूं, और तुम्हारा जीवन-अनुभव तो कुछ विपरीत ही कहता है। तुमने जो भी दुख जाने हैं, चिंतायें झेली हैं, संताप जाने हैं, वे सब प्रेम के कारण ही

जाने हैं। इसलिये तो लोग, बहुत लोगों ने तय कर लिया है कि प्रेम न करेंगे; चाहे कुछ हो, प्रेम न करेंगे; प्रेम से बचेंगे। क्योंकि जो प्रेम से बच जाता है, वह दुख से बच जाता है। लेकिन ध्यान रहे; जो दुख से बच जाता है, वह सुख से भी बच जाता है।

इस संसार में भगोड़े संन्यासी क्यों पैदा हुए?

प्रेम की इस दुविधा के कारण। यह सारा संसार प्रेम का ही फैलाव है। वह जो आदमी दुकान पर बैठा दुकान कर रहा है, वह भी प्रेम के कारण दुकान कर रहा है। दुकान असली नहीं है; गौर से खोजोगे, भीतर खोजोगे, तो प्रेम पाओगे। किसी स्त्री से प्रेम किया है। किसी बच्चे से प्रेम किया है। किसी परिवार से—मां, पिता से प्रेम किया है। अब उत्तरदायित्व है; अब उसे निभाना है। तो वह बाजार में धक्के खा रहा है; कि राह पर पत्थर तोड़ रहा है; कि पसीना बहा रहा है; कि हजार तरह की लानत-मलामत सह रहा है; हजार तरह के अपमान झेल रहा है। मगर प्रेम किया है, तो प्रेम का दायित्व है; उसे निभाना है; तो वह सब कुरबानी दे रहा है। अगर यह भाग जाये आदमी, इस बाजार से, इस झंझट से, इस प्रेम के उपद्रव से, तो निश्चित ही दुख से मुक्त हो जायेगा। क्योंकि दुख का कोई कारण नहीं रह जायेगा। लेकिन इससे यह मत समझ लेना कि सुख को उपलब्ध हो जायेगा। क्योंकि जहां दुख का ही कारण न रहा, वहां सुख का कारण भी न रहा।

तुम शोरगुल से भाग जाओगे, इससे शांत हो जाओगे—यह जरूरी नहीं है। शोरगुल से भागकर बाहर का शोरगुल बंद हो जायेगा। लेकिन अक्सर ऐसा होगा : जब बाहर का शोरगुल बंद हो जायेगा, तो भीतर का शोरगुल और भी प्रगाढ़ होकर दिखाई पड़ेगा, सुनाई पड़ेगा। रात के सन्नाटे में, एकांत में, किसी पहाड़ की गुफा में बैठकर देखा है; तो विचार जितना आक्रमण करते हैं, उतना कभी न किये थे। उस एकांत में विचार बुरी तरह घेर लेते हैं। एकांत, पृष्ठभूमि बन जाता है। और एकांत और शांति के कारण, बाहर की शांति के कारण, भीतर जरा-सा भी कोलाहल है, तो बहुत मालूम होता है।

बाजार में बैठकर भीतर कोलाहल होता है, होता रहता है, लेकिन बाहर इतना कोलाहल है कि भीतर की सुनता कौन है?

तो तुम्हारा जो भगोड़ा संन्यासी है, वह दुख से तो भाग जाता है। लेकिन सुख को उपलब्ध नहीं होता। इसलिये तुम अपने साधुओं के जीवन में दुख तो न पाओगे; दुख का कोई कारण ही नहीं है। दुख की सारी व्यवस्था से वे हट गये हैं। लेकिन सुख तुमने पाया? उनकी आंखों में तुमने कोई शांति के झरने बहते देखे? और उनके हृदय में तुमने उल्लास देखा? तुमने गीत लगते देखे आनंद के? तुमने उन्हें नाचते देखा?

और जब तक संन्यासी नाचता न हो, तब तक संन्यासी में कुछ कमी रह गयी।

संसार से तो हट गया, लेकिन परमात्मा नहीं मिला। संसार में रहने वाले भी कभी-कभी नाच लेते हैं, लेकिन तुम्हारा संन्यासी तो कभी नहीं नाचता। संसार में रहनेवालों को कभी-कभी क्षणभर के लिये सुख की झलक मिलती है। न मिलती होती, तो लोग संसार में रहते ही न। क्षणभर को मिलती है; सच है। मगर मिलती है। तुम्हारे संन्यासी को क्षणभर को भी नहीं मिलती।

कभी-कभी संसारी के मन पर तो थोड़ी-सी रोशनी फैल जाती है; सुबह हो जाती है; कोई दीया जगमगाता है; हालांकि थोड़ी देर ही टिकता है। क्योंकि संसार में ज्यादा देर कोई चीज टिक नहीं सकती। समय में ज्यादा देर कोई चीज टिक नहीं सकती।

समय क्षणभंगुर का विस्तार है। पानी का बबूला ही सही; मगर पानी का बबूला भी जब होता है, तो होता है। यह मत समझना कि नहीं होता है। नहीं हो जायेगा, सच है; लेकिन जब होता है, तब पूरी तरह होता है। और पानी का बबूला भी जब होता है, तो इतना ही होता है, जितने पहाड़ होते हैं। होने होने में थोड़े ही फर्क होता है? घड़ी भर बाद फूट जायेगा, बिखर जायेगा; इससे आज है—अभी है—इसमें कोई संदेह थोड़े ही है? और जब पानी का बबूला भी होता है और पानी की सतह पर तैरता है, तो वही अस्मिता होती है, वही अहंकार होता है—जो तुम्हारा है।

सूरज की रोशनी पानी के बबूले पर सतरंगा इंद्रधनुष बनाती है। क्षणभर को ही टिकेगा यह रंग; क्षणभर को ही टिकेगा यह होना।

लेकिन संसार में क्षणभर को सुख मिलता है। न मिलता होता, तो लोग इतना दुख झेलते ही नहीं। उसी क्षणभर के सुख के लिये इतना दुख झेल लेते हैं। इतना दुख भी झेल लेते हैं—उस क्षणभर के सुख के लिये। सौ मौकों में एक बार मिलता है। निन्यानबे बार चूकना पड़ता है। लेकिन फिर भी लोग निन्यानबे बार चूकने को तैयार हैं; एक बार तो मिलता है न! मरुस्थल है बड़ा—माना—लेकिन कभी-कभी इसमें मरुद्यान भी होते हैं। कभी-कभी वृक्षों की हरी छाया भी होती है। कभी-कभी पानी का झरना भी होता है। प्यास तृप्त भी होती लगती है। हो या न हो।

मगर तुम्हारे संन्यासी के जीवन में तो मरुद्यान भी नहीं है। मरुस्थल के भय के कारण

वह मरूद्यान से भी भाग गया है। तो प्रेम में झंझटें हैं जरूर। दुनिया में जितने रोग हैं; सब प्रेम के रोग हैं। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं; प्रेम से भागना मत; प्रेम को समझना। प्रेम को रूपांतरित करना।

जो नीचे ले जाता है रास्ता, वही ऊपर भी ले जाता है। जो सीढ़ी नीचे ले जाती है, वही सीढ़ी ऊपर ले जाती है। इतना सीधा गणित है। सिर्फ दिशा का भेद होता है। नीचे जाते वक्त तुम नीचे की तरफ आंखें गड़ाये होते हो। ऊपर जाते वक्त तुम्हारी ऊपर की तरफ आंखें अटकी होती हैं। नीचे की तरफ अटकी आंखों को मैं वासना कहता हूं; ऊपर की तरफ उठी आंखों को मैं प्रार्थना कहता हूं।

बस, इतना ही फर्क है—प्रार्थना और वासना का। अन्यथा सीढ़ी वही है। नीचे उतरो तो संभोग, ऊपर चढ़ो तो समाधि। और कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है...। अक्सर पाओगे ऐसा होता—कि दो आदमी एक ही जगह खड़े हैं, और एक नीचे की तरफ जा रहा है, और एक ऊपर की तरफ जा रहा है। जहां तक खड़े होने का संबंध है, एक ही जगह खड़े हैं। समझ लो कि सीढ़ी के किसी पायदान पर दो आदमी खड़े हैं। जहां तक पायदान का संबंध है, एक ही पायदान है। लेकिन एक नीचे की तरफ जा रहा है और एक ऊपर की तरफ जा रहा है। तो मैं यह कहना चाहूंगा कि जो ऊपर की तरफ जा रहा है, वह उसी पायदान पर नहीं है; दिखाई उसी पायदान पर पड़ता है। और जो नीचे की तरफ जा रहा है, वह भी उसी पायदान पर नहीं है; यद्यपि दिखाई उसी पायदान पर पड़ता है। नीचे जानेवाले का पायदान वही कैसे हो सकता है—जो ऊपर जानेवाले का पायदान है? यद्यपि दोनों एक ही सीढ़ी पर खड़े हैं। एक कदम और, और फर्क जाहिर हो जायेंगे। जो ऊपर जा रहा है, वह ऊपर की सीढ़ी पर होगा। जो नीचे जा रहा है, वह नीचे की सीढ़ी पर होगा। दो कदम और—और फर्क और बड़े हो जायेंगे। और जिंदगी के अंत में एक के हाथ में नरक लगता है, एक के हाथ में स्वर्ग लगता है।

मगर सीढ़ी से मत भाग जाना। सीढ़ी प्रेम की है। इसलिये मैंने प्रेम की परम महिमा तुमसे कही है।

मगर मेरी बात से भ्रांति भी हो सकती है। सभी सत्य खतरनाक होते हैं। सिर्फ असत्य ही खतरनाक नहीं होते हैं। क्योंकि असत्य नपुंसक होते हैं। असत्यों में कैसा खतरा? असत्य होता ही नहीं, तो खतरा कैसे? लेकिन सत्य सभी खतरनाक होते हैं। इस दुनिया में जितने खतरे हुए हैं, सभी सत्य के कारण हुए हैं। असत्य के कारण कोई खतरा नहीं होता। असत्य तो खेल-खिलौनों की दुनिया है। तुम एक उपन्यास पढ़ो; कोई खतरा नहीं होनेवाला है। लेकिन बुद्ध के वचन पढ़ो—खतरा है। उपन्यास को ठीक समझो, तो भी कुछ होनेवाला नहीं है। गलत समझो तो भी कुछ होनेवाला नहीं है। उपन्यास आखिर उपन्यास है। क्षणभर का मनोरंजन है, फिर भूल जाओगे। लेकिन बुद्ध के वचन तुम्हारे कानों पर पड़ें, तो कुछ होनेवाला है। कैसी तुम व्याख्या करोगे—इस पर सब निर्भर होगा। जिन्होंने

प्रेम का मार्ग बारीक है; अति सूक्ष्म है। और इसलिये प्रेम शब्द भी बहुत अर्थ रखता है। जब कामी इस शब्द का उपयोग करता है, तो प्रेम का अर्थ होता है—काम। और जब भक्त इसी शब्द का उपयोग करता है, तो प्रेम का अर्थ होता है—राम। काम से लेकर राम तक सब प्रेम से जुड़ा है

असत्यों में कैसा खतरा? असत्य होता ही नहीं, तो खतरा कैसे? लेकिन सत्य सभी खतरनाक होते हैं। इस दुनिया में जितने खतरे हुए हैं, सभी सत्य के कारण हुए हैं। असत्य के कारण कोई खतरा नहीं होता। असत्य तो खेल-खिलौनों की दुनिया है

गलत व्याख्या कर ली, वे बड़े गहन घने अंधेरों में भटक गये। जिन्होंने ठीक समझा, उन्होंने रोशनी का दरवाजा खोल दिया।

जब मैं तुमसे प्रेम की बात कहूं, तो तुम भूलकर भी अपने प्रेम की बात मत समझ लेना—जो कि मन करता है समझने के लिये।

मन कहता है कि ठीक है; तो यही तो मैं कर रहा हूं। प्रेम की आप बात करते हैं। बिलकुल ठीक करते हैं। यही तो मैं करता हूं।

लेकिन मैं तुम्हारे प्रेम की बात नहीं कर रहा हूं। मैं मेरे प्रेम की बात कर रहा हूं। और तुमने अगर तुम्हारे प्रेम का समर्थन समझा, तो तुम बुरी तरह भटक जाओगे।

मैं जिस प्रेम की बात कर रहा हूं, वह तुम्हारे प्रेम से बिलकुल उलटा है। तुम्हारे प्रेम में प्रेम है ही कहां? प्रेम जैसा क्या है वहां? तुम जब कहते हो : मैं किसी को प्रेम करता हूं, तो तुमने गौर किया? तुम्हें दूसरे से कोई प्रयोजन भी है? तुम्हारा प्रेम क्षणभर में तो घृणा में बदल जाता है! इसका भरोसा क्या है? जिस स्त्री को तुम प्रेम करते थे और कहते थे : प्राण दे दूंगा; अगर आज तुम्हें शक हो जाये कि वह किसी और के प्रेम में पड़ गयी, तो तुम उसकी गरदन उतार लोगे। यह कैसा प्रेम था? प्राण देने को तैयार थे; अब प्राण लेने को तैयार हो गये! क्षणभर की देर न लगी! जिसके लिये मर जाते, उसे मारने को तत्पर हो गये हो! यह कैसा प्रेम है? नहीं; प्रेम तुम्हें स्त्री से न था। प्रेम तुम्हें अपने अहंकार से था। स्त्री तो आभूषण थी। और अगर किसी और का आभूषण बनना चाहती है, तो तुम तोड़ दोगे, मिटा दोगे। उपनिषद कहते हैं : पति पत्नी को प्रेम नहीं करता। पति अपने को ही प्रेम करता है पत्नी के बहाने। बाप बेटे को प्रेम नहीं करता; अपने को ही प्रेम करता है।

आज तक तुमने अपने बेटे को प्रेम किया। सब तरह की कुरबानियां दीं। अपने बेटे को पढ़ाया-लिखाया, बड़ा किया। शायद तुम भूखे रहे हो; शायद सुन्दर वस्त्र न जुटा पाये हो अपने लिये, लेकिन बेटे के लिये सब कुछ किया। और आज अचानक तुम्हें एक पत्र मिल जाये पड़ा—घर के कूड़े-करकट में। सफाई करते वक्त दीवाली की, तुम्हें एक पत्र मिल जाये, जिससे यह शक पैदा हो जाये कि तुम्हारी पत्नी किसी और के प्रेम में थी और यह बेटा तुम्हारा नहीं है तो तुम्हारा प्रेम गया।

तुम्हारा बेटे से प्रेम था—या मेरे बेटे से प्रेम था—मेरा हो तो प्रेम। तो प्रेम मेरे से ही था; बेटे-वेटे की बात तो बहाना है। ये तो बहाना है। कहीं तो मेरे को टिकाना पड़ता है, तो बेटे का टिका लिया था। आज यह पता चल गया कि मेरा बेटा नहीं; किसी और का है, तो बात खतम हो गयी। इस व्यक्ति से तुम्हारा क्या प्रेम था? यह व्यक्ति तो अब भी वही का वही है। कोई फर्क नहीं पड़ा इस व्यक्ति में। सिर्फ तुम्हारी एक धारणा में फर्क पड़ा है। इस बेटे को तो पता भी नहीं है। यह तो कल जैसा था, वैसा ही आज है। लेकिन तुम बदल गये। अब हो सकता है, तुम इसे जहर खिला दो; कि हो सकता है कि आज से तुम इसके जीवन में सहारा न बन जाओ, बाधक बन जाओ।

यह कैसा प्रेम है, जो घृणा बन सकता है? और तुम्हारा प्रेम प्रतिपल घृणा बनने को तैयार है। और तुम्हारे प्रेम में यह घृणा की जो संभावना है, यही ईर्ष्या जन्माती है।

तो तुम्हारा प्रेम ईर्ष्या के धुएं से भरा है। इस धुएं में प्रेम की ज्योति को खोजना तो बहुत मुश्किल है। धुआं ही धुआं है।

कितनी ईर्ष्या है प्रेम के कारण! तुम्हारी पत्नी किसी की तरफ देखकर मुस्करा न दे। तुम्हारा पति किसी के पास बैठकर प्रसन्न न हो ले।

प्रेमी क्या हैं, एक दूसरे के दुश्मन हैं! और एक दूसरे के ऊपर पहरा दे रहे हैं! एक दूसरे की जासूसी कर रहे हैं! चौबीस घंटे नजर लगाये हुए हैं।

यह कोई प्रेम हुआ? जिसमें इतना भी भरोसा नहीं है; जिसमें इतनी भी श्रद्धा नहीं। दूसरे के प्रति इतना भी सम्मान नहीं। और दूसरे की स्वतंत्रता के प्रति जरा भी सद्‌भाव नहीं। यह प्रेम है?

मैं इस प्रेम की बात नहीं कर रहा हूं। यह तो

जहर है। यही तो तुम्हें संसार में बांधे हुए है। अब इसे तुम समझना।

जो प्रेम घृणा बन सकता है, जो प्रेम सदा ही ईर्ष्या से भरा हुआ है, जो प्रेम परिग्रह का ही एक दूसरा नाम है—और अहंकार की ही घोषणा है, मैं उस प्रेम की बात नहीं कर रहा हूं।

मैं उस प्रेम की बात कर रहा हूं, जिसमें परिग्रह का भाव ही नहीं उठता। प्रेम जानता ही नहीं—मेरा-तेरा। मेरे-तेरे शब्द छोटे हैं, ओछे हैं।

यह कैसा प्रेम है, जो घृणा बन सकता है? और तुम्हारा प्रेम प्रतिपल घृणा बनने को तैयार है। और तुम्हारे प्रेम में यह घृणा की जो संभावना है, यही ईर्ष्या जन्माती है। तो तुम्हारा प्रेम ईर्ष्या के धुएं से भरा है। इस धुएं में प्रेम की ज्योति को खोजना तो बहुत मुश्किल है। धुआं ही धुआं है

कबीर ने कहा : लाज नहीं आती—मेरा-तेरा कहते? शरम नहीं खाते? यहां क्या मेरा है, क्या तेरा है? सब परमात्मा का है।

जो प्रेम घृणा बन सकता है, वह प्रेम, प्रेम हो ही नहीं सकता। वह सिर्फ प्रेम का धोखा है, भ्रांति है; उससे जागना। और जिस प्रेम में ईर्ष्या घर किये बैठी है—सावधान—यह संकेत होने चाहिये कि प्रेम नहीं है।

ये तो सब प्रेम के दुश्मन हैं, जो घर में बैठे हैं। दरवाजे पर लिख रखा है : प्रेम; और भीतर ये सब 'देवता' विराजमान हैं! यह मंदिर धोखे का है। इसमें देवता तो हैं ही नहीं; यह सिर्फ नाम का मंदिर है। भीतर जाओगे, तो सांप-बिच्छू पाओगे।

इन्हीं सांप-बिच्छुओं से घबड़ा कर अनेक लोगों ने प्रेम त्याग दिया। अनेक लोगों ने संसार नहीं भी त्यागा, तो अपने हृदय को रोक लिया; सब भांति, कि कभी किसी के प्रेम में न पड़ेंगे। इसलिये तो दुनिया में इतना कम प्रेम दिखाई पड़ता है। जो प्रेम में दिखाई पड़ते हैं, वे परेशान दिखाई पड़ते हैं। जो प्रेम में नहीं हैं, वे कम परेशान हैं। उन्होंने कुछ दूसरे रास्ते खोज लिये हैं। वे प्रेम में नहीं पड़ते। वे झंझट में नहीं जाते हैं। इसलिये लोगों ने विवाह ईजाद किया।

विवाह प्रेम से बचने का उपाय है। प्रेम की झंझट में नहीं जाना है। यह कहां ले जायेगा, कुछ पता नहीं। विवाह ज्यादा व्यवस्थित, सुरक्षित है; ज्यादा सुविधापूर्ण है।

इसलिये बालविवाह कर देते थे हम पुराने दिनों में; अब भी चलता है। बालविवाह का मतलब यह होता था कि इसके पहले कि प्रेम की समझ उठे, उसके पहले ही विवाह कर देना, ताकि प्रेम किसी खतरे में न ले जाये। प्रेम की प्यास उठे, उसके पहले ही पानी का इंतजाम कर देना। पानी पहले ही पिला देना, प्यास लगी ही न हो। तो न पानी का सवाल उठेगा पीछे, न प्यास उठेगी पीछे।

बालविवाह का अर्थ है : प्यास तो है नहीं अभी, और पानी पिला दिया। भूख तो है नहीं अभी, और भोजन करवा दिया। तो अब कभी भूख उठेगी भी नहीं, क्योंकि भोजन पहले से ही करवाते रहोगे। न उठेगी भूख, न होगा खतरा।

तो कुछ ने विवाह का आयोजन करके प्रेम से अपने को बचा लिया। कुछ संसार से भागकर अपने को बचा लिये। और जो संसार में रह गई, अधिक संख्या, उन्होंने अपने हृदय को कठोर कर लिया; पथरीला कर लिया। रहेगा कठोर हृदय, प्रेम इत्यादि की झंझट न होगी। और न करेंगे प्रेम, न किसी उपद्रव में पड़ेंगे।

ऐसे लोग धन कमाते हैं, पद कमाते हैं, प्रतिष्ठा कमाते हैं—प्रेम से भर बचे रहते हैं। ऐसे लोग देश को प्रेम करते हैं! मनुष्य को प्रेम करते हैं। मगर प्रेम कभी नहीं करते।

अब देश से क्या खाक प्रेम करोगे? देश-प्रेम का क्या मतलब हो सकता है? देश को कहीं पाया है? मिले हो? लोग भारत माता की तस्वीरें बनाये बैठे हैं!

असली मां से बचने के लिये भारत माता की तस्वीर काफी काम आती है। असली मां मौजूद है। उससे तो प्रेम उठाने में खतरा है और झंझट है। भारत माता बिलकुल ठीक है। वह कैलेंडर में ही होती है। उससे कुछ लेना-देना नहीं है।

मनुष्य—असली से—प्रेम करना बहुत कठिन है। मनुष्यता से प्रेम बिलकुल सरल है। मनुष्यता से कहीं मिलना होता है? कभी मनुष्यता से मिलना हुआ है? कभी ऐसा हुआ कि मनुष्यता से जय-जय रामजी हो गयी हो?

जब भी कोई मिलता है, तो मनुष्य मिलता है। लेकिन तुम तो मनुष्यता से प्रेम करते हो, तो मनुष्य से प्रेम करने की कोई जरूरत नहीं। बल्कि बड़ा मजा यह है कि अगर मनुष्यता के लिये जरूरत पड़े तो मनुष्य की तुम कुरबानी देने को तैयार हो। भारत माता के लिये जरूरत पड़े तो लाखों लोगों को कटवाने के लिए तैयार हो। यह कैसा प्रेम हुआ?

यह भारत माता कौन है? यह मनुष्यता क्या है? इसलाम से लोगों को प्रेम है। हिंदू-धर्म से प्रेम है। हिंदू-धर्म खतरे में हो, तो जान देने को तेयार हैं।

ये तरकीबें हैं—निजी प्रेम के उपद्रव से बचने की। मगर जो तूफान से बचता है, वह चुनौती से बच जाता है।

मैं तुमसे कहता हूं : बचकर भागने की कोई जरूरत नहीं है; न हृदय को कठोर करने की जरूरत है। प्रेम के अपूर्व राज को समझने की जरूरत है—कि प्रेम है क्या?—हम प्रेम के माध्यम से क्या खोजना चाहते हैं?

— ओशो

कहै कबीर मैं पूरा पाया

अठारहवां प्रवचन, पहला प्रश्न

(पूरा प्रवचन टेप पर भी उपलब्ध है)